हिन्दी भाषा शिक्षण व अधिगम के समय शिक्षक और शिक्षार्थी के सामने आने वाली चुनौतियों

भाषा में कुशलता अर्जित करने के लिये अभ्यास करना आवश्यक होता है। बच्चा के कुछ महीनों करते हुए धीरे-धीरे भाषा को को मस्त में एकत्रित तो करता है बड़ा होने पर भाषा के शुद्ध और स्तरीय प्रयोग भाषायी ताओं के निरन्तर अभ्यास से समय है। हर बच्चा मातृभाषा को बड़ी ही सुगमता से सी है। जहां पर हिन्दी मातृभाषा के रूप में विद्यार्थी पड़ता है उसे हिन्दी -अधिगम (सीखना अथवा परिवर्तन) का सामना नहीं करना पड़ता न ही शिक्षक को हिन्दी शिक्षण में अधिक आप अहिन्दी भाषी प्रदेशों में **शिक्षक** और शिक्षार्थी के लिए हिन्दी शिक्षण और हिन्दी अधिगम श्रमसाध्य कार्य है। हिन्दी भाषा शिक्षण अधिगम समय के सामने आने वाली पर विचार विमर्श करने से पहले शिक्षण और यह जान ल|

शिक्षण का अर्थ

शब्द सखाने की क्रिया को शिक्षण कहा जाता है परन्तु शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया की बात करती है जैसे समाज वातावरण, साधन मूल्य मान्यताएं इत्यादि कई विद्वान शिक्षण को अन्त प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते है एच. सी. मोरीसन अनुसार, शिक्षण व प्रक्रिया है जिसमे अधिक विकसित व्यक्तित्व कम विकसित व्यक्ति के सम्पर्क में आता है और कम विकसित व्यक्तित्व की आगे की शिक्षा के विकास की व्यवस्था करता है। इस तरह हम कह सकते है शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिस का नियोजन ऐसे वातावरण में हो जो सकारात्मक व सात में छात्रों को सिखाने के लिए प्रयत्न है। शिक्षण का अर्थ ही सिखाना होता है। यह प्रक्रिया सोदेश्य हो, विकासातमक हो एवं सतत हो, औपचारिक एवं अनौपचारिक भी हो सकती है।

अधिगम का अर्थ

अधिगम का साधारण अर्ध सीखना परन्तु आज के शिक्षा विद अधिगम को व्यापक अर्थों में लेते हैं सीखने के साथ व्यवहार में परिवर्तन भी होना आवश्यक है| अधिगम का अर्थ है सीखना अथवा व्यवहार परिवर्तन। परन्तु व्यवहार में परिवर्तन तभी आता है जब शिक्षार्थ अन से सीखता है। किसी ने तैराकी करनी

है। परन्तु जब तक वह पानी मे नहीं देगा। उसके लिए उसको पानी का अनुनय चाहिए। खाली नियम से नहीं सीख पाएगा |

रिकनर के अनुसार, "अधिगम व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है|"

अधिगम प्रक्रिया मानव की ऐसी प्रवृति है जिससे व्यक्ति की मानसिक, सामाजिक योग्यताओं का विकास होता है। यह जीवनपर्यन्त चलने वाली या तथा नियोजित एवं सक्रियतापूर्ण प्रक्रिया है।

<u>हिन्दी भाषा शिक्षण व अधिगम</u>

भारत में हिन्दी समझने वालों की संख्या 24.40% है भोपाल में 10वें विश्वसम्मेलन में सरकार की तरफ से हो रहे प्रयासों को इन्हें स्पष्ट किया गया है कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्र भाषा संघ की छवी आधिकारिक भाषा के रूप में बनाया जाएगा भविष्य में हिन्दी भाषा शिक्षण की लोकप्रियता विश्व के प्रसिद्ध देशों व पूरे भारत में बढ़ने की आशा है। किसी भाषा को सीखने के म में प्रथमत चार कौशल जरूरी है। हिन्दी में भी यही चार कौशल- समझना , बोलाना, पढ़ना (मात्राओं इत्यादि का ज्ञान) लिखा लिपि की बनावट इत्यादि का ज्ञान आवश्यक है। धीरे-धीरे गहन अध्ययन स्वाध्याय से गद्य ,कविता, लेख ,बाध साहित्य का ज्ञान इत्यादि भी आवश्यक रहता है। भाषायी कौशल बढ़ाने के लिए निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता रहती है। शिक्षक को हिन्दी शिक्षण में इस बात पर विशेष ध्यान रखना होता है कि शिक्षण का नियोजन इस ढंग से करे कि छात्रों की योग्यताओं के अनुसार व्यक्तित्व का विकास का प्रयास किया जा सके। क्योंकि अधिकांश शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षण को त्रिकोणीय प्रक्रिया कहा है ब्लूम के अनुसार, "शिक्षण के तीन पक्ष (1) शिक्षण उदेश्य (2) सीखने के अनुभव (3) व्यवहार परिवर्तन है। इस के अनुसार जब हिन्दी शिक्षण हो तो शिक्षक और शिक्षार्थी समान रूप से क्रियाशील रहे।

परन्तु आज के शिक्षण में ऐसी परिस्थितियों की व्यवस्था की जाती है जिनमें कुछ रिक्त जगह छोड़ दी जाती है तथा मुश्किलों को हल करने के लिए शिक्षार्थी के लिए स्थान छोड़ा जाता है। इस प्रकार के शिक्षण में शिक्षक के अपेक्षा शिक्षार्थी अधिक सक्रिय रहता है। शिक्षण प्रक्रिया में देखा जाता है कि अक्सर औसत शिक्षार्थियों के अनुसार शिक्षण की व्यवस्था रहती है व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर ध्यान नहीं दिया जाता और प्रतिभाशाली तथा कमजोर शिक्षार्थियों की अवहेलना रहती है पर यदि हम उनकी कठिनाइयों की बात करें तो न ही सामान्य न प्रतिभाशाली, न ही कमजोर शिक्षार्थियों पर कोई ध्यान नहीं रहता। प्रतिभाशाली छात्रों को बार- संज्ञा सर्वनाम करवाने से वे ऊब जाते है कक्षा मैं पाठ की पुनरावृति से दुखी हो जाते हैं। कमजोर

छात्रों का शिक्षण भी औसत विद्यार्थियों से अलग रहना चाहिए कमजोर विद्यार्थियों को वो चाहिए पुनरावृति ही उस से ही उन्हें समझ जाता है। तो ही उनकी कठिनाईयों का निदान होता है। प्रश्न पैदा होता है कि शिक्षक को हिन्दी - शिक्षण में और शिक्षार्थियों को अधिगम के समय कौन-कौन सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जिनका उल्लेख निम्न अनुसार है। इसका दो भागों में बाँट कर करेंगे।

1. निदानात्मक शिक्षण (डायगोनिस्टिक शिक्षण)

2. उपचारी शिक्षण (Remedial Teaching)

(क) निदानात्मक शिक्षण (Diagnostics Teaching) एवं वर्तनी की जब किसी व्यक्ति को शारीरिक रोग है तो इलाज से पहले पता लगाया जाता है कि उसको क्या रोग या दोष है? इस

दोष का पता लगाना निदान कहलाता है। इस तरह जब शिक्षार्थी भाषा सीखते है तो यह कई प्रकार के दोष करते रहते हैं उन्हें शिक्षण प्रक्रिया में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कई विद्यार्थियों का अशुद्ध उच्चारण होता है। कुछ लिखने में व्याकरण एवं वर्तनी की अशुद्धियों करते हैं। विद्यार्थियों के भाषा सम्बंधी दोषों को यदि शिक्षक नहीं समझते तो यही दोष जीवन पर्यन्त चलते है यदि वही पर शिक्षक उसका उपचार करे तो निश्चित रूप से शिक्षार्थी समझते भाषा अधिगम में आने वाली कठिनाइयों का हल निकाल लेते हैं। अक्सर देखा जाता है कि विद्यार्थियों को न ब के उच्चारण ठीक ढंग से नहीं कर पाते। जब तक शिक्षक उसको उपचार पद्धति से ध्वनि के स्थान से अवगत नहीं करायेगा तब तक शिक्षार्थी सजग होकर म ब का शुद्ध उच्चारण नहीं करेगा। इसलिए शिक्षक को चाहिए वह हिन्दी शिक्षण की प्रक्रिया को निदानात्मक शिक्षण के लक्ष्यों को सामने रखे अन्यथा जीवन पर्यन्त भाषा सम्बन्धी ध्वनियों की त्रुटियों एवं अन्य चुनौतियों के साथ उनके व्यक्तित्व विकास तथा जीवन को सफल बनाने में बाधा खड़ी कर सकती है।

निदानात्मक शिक्षण से जो भी दोष पकड़ में आते हैं। उनको शिक्षक समझें यह शिक्षार्थियों की परीक्षाओं से पहले होना चाहिए। परीक्षाओं में प्राप्त अंकों के आधार पर विद्यार्थियों का क्षमाताओं कर स्तर निर्धारित किया जाता है।क्योंकि उस समय अंको के आधार पर स्तर का पता चलता है। यदि अंक कम है तो परीक्षा में त्रुटियां अधिक है और त्रुटियों का निवारण परीक्षाओं से पहले होना चाहिए। कई बार परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने पर त्रुटियाँ नज़र आती। यह शिक्षक द्वारा निदानात्मक शिक्षण न होने के कारण से होता है। सोचिए कि कई प सेश के उच्चारण के

अन्तर को समझ नहीं पाते, शिक्षक भी उस और ध्यान नहीं दे पाते तो यह ध्वनि पक्की हो जाती है। यह सब दोषों को जानने के लिए शिक्षक की ओर से निदानात्मक शिक्षण की आवश्यकता है।

डॉ. एल. मुकर्जी के विचारनुसार, कैसे भी कारण क्यों न हो उनका जल्दी से ही निदान महत्वपूर्ण होता है। इस से बुरी आदतों का निर्माण नहीं होता और विशेष कठिनाइयां बन जाती है। यह शिक्षक और कभी-कभी शिक्षार्थी को भी उस क्षेत्र-विशेष के प्रति सचेत कर देता है। जिस में दोष होते हैं और यह उपचार के प्रति एक लम्बा कदम है। इस प्रकार शिक्षक को हिन्दी शिक्षण में शिक्षार्थियों की निम्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है उनका पता लगाना चाहिए। जिससे शिक्षार्थियों को भी उन्हें ठीक करने के अवसर मिलें।

<u>हिन्दी शिक्षण व अधिगम सम्बन्धी चुनौतियों को पहचानना</u>

(i) शिक्षक अशुद्ध वाचन के लिए पता लगाए कि ऐसे कौन-कौन से है। जिन यह शुद्ध वाचन नहीं कर पाते दूसरी शारिरीक दोष हो सकता है या फिर अभ्यास की कमी होती है या फिर पारिवारिक या स्थान का वातावरण का प्रभाव होता है।

(ii) लेखन सम्बन्धी चुनौतियों के विषय में भी उनके दोनों को पहचाना और उनका उप लेखन सुन्दर न होना, उसमें सुडीलता की कमी अक्षरों के मन में कमी गति से न लिख पाना अस्पष्टता होना इत्यादि विषय-वस्तु को सुव्यवस्थित ढंग से न लिख पाना क्रमबद्धता का अभाव होना इत्यादि ।

हिन्दी भाषा के शिक्षक को शिक्षार्थी की मौखिक सम्बन्धी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। क्यों कि अध्यापक माहता है कि शिक्षार्थी धारा प्रवाह बोलना शुरू करें। शिक्षार्थी की मातृभाषा हिन्दी है तो यह धारा प्रवाह बोलता है। यदि हिन्दी द्वितीय भाषा या राष्ट्र भाषा के रूप में कुछ वर्ष पढ़ी है तो उन दोनों के समक्ष बहुत सी कठिनाइयाँ रहती है। शिक्षक अभ्यास के मौके नहीं दे पाता और शिक्षार्थी भी अभ्यास में रूचि नहीं दिखाता। दोनों के सामने मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता में कुशलता का निर्माण करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। भाषा की शुद्धता पर जोर भी हिन्दी शिक्षण की प्रक्रिया में अति जरूरी है। हिन्दी ध्वन्यात्मक भाषा है अत शिक्षक शिक्षार्थियों की ध्वनियों का ठीक प्रशिक्षण पर बल नहीं देता एवं उनकी मौखिक अभिव्यक्ति के अभ्यास के पर्याप्त अवसर नही दे पाता।

<u>भाषायी कुशलता सम्बन्धी चुनौतियों के अतिरिक्त शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों में अन्य कठिनाईयां</u>

शिक्षक की अल्पक्षता तथा उस के मन में तनाव या फिर परिस्थिति जन्य कारणों से भाषा सम्बनी कई दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इसी तरह शिक्षार्थियों में संवेदनात्मक अवरोधी से भाषा सीखने में कठिनाई आती है।शारीरिक दोषों से भी जैसे श्रवण शक्ति कमजोर है तो शिक्षक की अभिव्यक्ति को ठीक से नहीं समझ पाएगा हाथों के स्नायुतंत्र कमजोर है तो लिखने की अभिव्यक्ति में दोष आता है। शरीर प्रथियों के संतुलित न होने से शरीर में कितने प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाते हैं। गले के थाईराईड से आवाज मुश्किल से निकल पाती है।

उपर्युक्त विवेचन से यह बहुत जरूरी है कि चुनौतियों को बड़ी समस्या नहीं मानना है शिक्षक और शिक्षार्थी को निष्क्रिय नहीं बनना बल्कि शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है। शिक्षक का प्रभावशाली शिक्षण तभी होगा जब समपानुरूप समय का सदयपोग करता हुआ त्रुटियों को अच्छी तरह समझा सकेगा और शिक्षार्थियों में सीखने की रूचि उत्पन्न करके उन्हें वांछित परिवर्तन की ओर उन्मुख करेगा। यह तभी हो सकेगा जब शिक्षार्थी अपने किसी प्रकार के दोष को अपना लेगा और शिक्षक उनकी चुनौतियों को दूर करने के पूर्ण एवं सहायक के रूप में अपनी मा अपनायेगा। अत:निदानात्मक शिक्षण से हिन्दी शिक्षण एवं करता है। पर किसी प्रकार की हिन्दी भाषा सम्बंधी त्रुटियों से पहले उसके कारण को जानने की आवश्यकता रहती है।

<u>हिन्दी भाषा शिक्षण व अधिगम की नीतियों को हल करने की विधियों</u>

1. निरीक्षण विधि

2. परीक्षण विधि

3. साक्षात्कार विधि

4.संचित लेखा विधि

1.निरीक्षण विधिः इस विधि से रहता है कि किस तरह की अशुद्धियों या नीतियाँ शिक्षार्थी कर रहा है। कारण ध्यान से देखा जाता है। उदाहरण यदि कोई शिक्षार्थी अशुद्ध पान करता है तो शिक्षक निरीक्षण से यह पाता है कि उसने आदर्शाचन ध्यान से नहीं सुना है। या कानों में दोष है या पारिवारिक प्रभाव है। ऐसी स्थितियों में शिक्षार्थी को भलीभांति कारण जान कर उसे और अभ्यास से दूर करवाया जाता है। इसी लेखन

सम्बधी शिक्षक की रचनात्मक कार्य की अवहेलना के लिए शिक्षार्थी के लिए सुन्दर प्रयास चल जाने माहिए अवसर देखा जाता है कि शिक्षार्थी विज्ञान शब्द की पहचान नहीं पाते है। उनको समय देकर श्यामपट्ट की सहायता से समझाएं।

2. परीक्षण विधिः अधिकांश शिक्षार्थी अपने अपमान की वजह से बहुत सी त्रुटियों को व्यक्त नहीं करते। ऐसी स्थिति में लिखित और मौखिक कक्षा परिक्षाओं से जांचा जा है। पर ध्यान रहे ये परिवार वमासिक छ : मासिक नहीं होनी चाहिए। कक्षा परीक्षाए हर पाठ की समाप्ति बाद चलनी चाहिए इन परीक्षाओं के अतिरिक्त कई शिक्षाविदों ने निदानात्मक परीक्षणों का भी निर्माण किया है। जिन की सहायता से भाषा सम्बन्धी त्रुटियों को जाना जा सकता है। शिक्षक श्यकता अनुसार परीक्षाओं को भी तैयार करके इन चुनौतियों का निकाल सकता है। ध्यान रहे शिक्षक परीक्षाओं की तैयारी से पहले अपनी भी तैयारी करें अल्पक्षता से परीक्षा ठीक ढंग से नहीं ली जा सकती।

3. साक्षात्कार विधि कुछ शिक्षार्थी संवेगात्मक एवं हीन भावना के शिकार होते है उनके लिए भी रह सकती है सत्कार विधि तभी स सकती है जब शिक्षार्थी को यह पता हो हमारे शिक्षक को हम से सहानुभूति हमारे मित्र की भांति है। दर्शक है,और इसान है। तभी बिना किसी के के लिए तैयार हो सकेगा। शिक्षार्थी का शिक्षक के साथ पूर्व कड़वाहट पूर्ण अनुभव साक्षात्कार चुनीतियों को समझने से सफलता नहीं मिलेगी। अत: शिक्षक को अपना व्यवहार आत्मीयतापूर्ण रखने की आवश्यकता है। फिर ही शिक्षक साक्षात्कार के माध्यम से शिक्षार्थी के मन की गहराईयों तक जा कर कार्य कर सकता है।

(ख) **उपचारी शिक्षण (Remedial Teaching)**

उपचार शिक्षा से अभिप्राय है कि हिन्दी शिक्षण में शिक्षार्थी की भाषा सम्बन्धी चुनौतियों का निराकरण नहीं करेगा तब तक एवं अधिगम प्रक्रिया पूरी नहीं हो सकती और यह भी जानना जरूरी है कि शिक्षक ने को सीखने पर उसने परिवर्तन आया है या नहीं। एक बार उसके सीखने का मार्ग प्रशस्त हो जाए तो नीतियों तो जड़ से उखड़ जाती है। सामने के समय बहुत बड़ी रहती है भाषा सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की नीतियाँ सामने है पर उनका हल कैसे हो? क्या करे?कियों के भाषायी विकास के लिए समुचित दिशा मिले और पविर्तन हो ।

उपचार की विधियों

1. समूहिक उपचार विधि:जैसे शीर्षक से स्पष्ट है कि कक्षा के समूह को ही भाषा समाधी चुनौती का हल करना सामूहिक उपचार है कि इसके लिए सामान्य अशुद्धियों की सूची तैयार कर लेता है जैसे वाचन, लेखन, व्याकरण की सूचियां बना ली जाए।शिक्षक आदर्श वाचन जरूर करे और शिक्षार्थियों से व्यक्तिगत वाचन भी करवाए। इसी तर अन्य त्रुटियों का हल के प्रयोग से भी किया जा सकता है इस में शिक्षक और शिक्षार्थियों के समय की बचत भी होती है। यह विधि होते हुए शिक्षार्थियों के लिए भारी है। पर इसके लिए अभ्यास अपेक्षित है।

2. व्यक्तिगत उपचार विधिः व्यक्तिगत उपचार हर शिक्षार्थी की व्यक्तिगत चुनौतियाँ होता है। इसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर ध्यान देना होता है। हर शिक्षार्थी को एक ही लाठी से होना उचित नहीं होता|

S.D. COLLEGE OF EDUCATION, BHI.
KNOWLEDGE IS VISION SUPREME
ज्ञानं चक्षुर्मनुष्याणाम